दस अह्काम

और

सोने का बछड़ा

das ahkām aur sone kā bachhṛā

The Ten Commandments and the Golden Calf

(Urdu—Hindi script)

© 2022 Chashma Media.
published and printed by
Good Word Communication Services Pvt. Ltd.
New Delhi, INDIA

Bible text is from UGV.
illus.: R. Gunther (www.lambsongs.co.nz)

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

अल्लाह ने इसराईली क़ौम को अहकाम दिए ताकि उनका ख़ुदा और एक दूसरे के साथ सुलूक ठीक हो। इससे ख़ुदा का क्या मक़सद था? वह चाहता था कि लोग उस पर भरोसा रखकर उसकी सुनें और उसके ताबे रहें। अगर वह ऐसे करें तो वह ख़ुशहाल ज़िंदगी गुज़ार सकेंगे।

ज़बूर में लिखा है,

> क्योंकि उसने याक़ूब की औलाद को शरीअत दी, इसराईल में अहकाम क़ायम किए। उसने फ़रमाया कि हमारे बापदादा यह अहकाम अपनी औलाद को सिखाएँ ताकि आनेवाली पुश्त भी उन्हें अपनाए, वह बच्चे जो अभी पैदा नहीं हुए थे। फिर उन्हें भी अपने बच्चों को सुनाना था। क्योंकि अल्लाह की मरज़ी है कि इस तरह हर पुश्त अल्लाह पर एतमाद रखकर उसके अज़ीम काम न भूले बल्कि उसके अहकाम पर अमल करे। वह नहीं चाहता कि वह अपने बापदादा की मानिंद हों जो ज़िद्दी और सरकश नसल थे, ऐसी नसल जिसका दिल साबितक़दम नहीं था और जिसकी रूह वफ़ादारी से अल्लाह से लिपटी न रही। (ज़बूर 78:5-8)

आइए हम तौरेत शरीफ़ में पढ़ें कि क्या हुआ :

तब मूसा ने क़ौम के पास जाकर रब की तमाम बातें और अहकाम पेश किए। जवाब में सबने मिलकर कहा, “हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे।” (ख़ुरूज 24:3)

पत्थर की तख़्तियाँ

पहाड़ से उतरने के बाद रब ने मूसा से कहा, “मेरे पास पहाड़ पर आकर कुछ देर के लिए ठहरे रहना। मैं तुझे पत्थर की तख़्तियाँ दूँगा जिन पर मैंने अपनी शरीअत और अहकाम लिखे हैं और जो इसराईल की तालीमो-तरबियत के लिए ज़रूरी हैं।”

मूसा अपने मददगार यशुअ के साथ चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ पर चढ़ गया। पहले उसने बुज़ुर्गों से कहा, “हमारी वापसी के इंतज़ार

में यहाँ ठहरे रहो। हारून और हूर तुम्हारे पास रहेंगे। कोई भी मामला हो तो लोग उन्हीं के पास जाएँ।”

मूसा रब से मिलता है

जब मूसा चढ़ने लगा तो पहाड़ पर बादल छा गया। रब का जलाल कोहे-सीना पर उतर आया। छः दिन तक बादल उस पर छाया रहा। सातवें दिन रब ने बादल में से मूसा को बुलाया। रब का जलाल इसराईलियों को भी नज़र आता था। उन्हें यों लगा जैसा कि पहाड़ की चोटी पर तेज़ आग भड़क रही हो। चढ़ते चढ़ते मूसा बादल में दाख़िल हुआ। वहाँ वह चालीस दिन और चालीस रात रहा। (ख़ुरूज 24:15-18)

रब शरीअत की तख़्तियाँ देता है

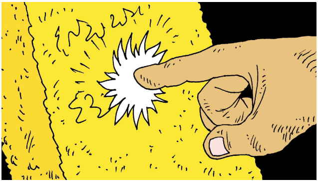

सब कुछ मूसा को बताने के बाद रब ने उसे सीना पहाड़ पर शरीअत की दो तख़्तियाँ दीं। अल्लाह ने ख़ुद पत्थर की इन तख़्तियों पर तमाम बातें लिखी थीं (ख़ुरूज 31:18)।

- **ख़ुदा ने ख़ुद अहकाम को क्यों क़लमबंद किया?**
  - ► वह इस पर ज़ोर देना चाहता था कि इनसान इनको कभी न भूलें। वह कभी न भूलें कि ख़ुदा ही मदद करता और नजात देता है। वही ख़ुदा जिसने इसराईली क़ौम को मिसर से निकालकर नजात दी।
- **इनका हमारे साथ क्या वास्ता है? क्या यह हम पर भी लागू हैं? क्या हमें भी इन अहकाम पर अमल करना चाहिए?**
  - ► बेशक। हज़रत ईसा ख़ुद भी बार बार इस पर ज़ोर देते हैं कि यह अहकाम मनसूख़ नहीं हुए हैं :

> यह न समझो कि मैं मूसवी शरीअत और नबियों की बातों को मनसूख़ करने आया हूँ। मनसूख़ करने नहीं बल्कि उनकी तकमील करने आया हूँ। मैं तुमको सच बताता हूँ, जब तक आसमानो-ज़मीन क़ायम रहेंगे तब तक शरीअत भी क़ायम रहेगी—न उसका कोई हरफ़, न उसका कोई ज़ेर या ज़बर मनसूख़ होगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए। (मत्ती 5:17-18)

और पौलुस रसूल साफ़ फ़रमाते हैं,

> शरीअत ख़ुद मुक़द्दस है और इसके अहकाम मुक़द्दस, रास्त और अच्छे हैं। (रोमियों 7:12)

नीज़, वह फ़रमाते हैं,

> क्योंकि हर पाक नविश्ता अल्लाह के रूह से वुजूद में आया है और तालीम देने, मलामत करने, इसलाह करने और रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारने की तरबियत देने के लिए मुफ़ीद है। कलामे-मुक़द्दस का मक़सद यही है कि अल्लाह का बंदा हर लिहाज़ से क़ाबिल और हर नेक काम के लिए तैयार हो।
> (2 तीमुथियुस 3:16-17)

- **क्या इसराईली क़ौम अब से इन अहकाम पर वफ़ादारी से चलते रहे? उनको तो मालूम हो चुका था कि ख़ुदा मेहरबान है और उनकी मदद करने को तैयार रहता था। अब से वह यह भी जानते थे कि ख़ुदा उनसे क्या चाहता है। क्या यह इतना मुश्किल काम था?**

► आइए हम देखें कि इसके बाद क्या हुआ।

सोने का बछड़ा

पहाड़ के दामन में लोग मूसा के इंतज़ार में रहे, लेकिन बहुत देर हो गई। एक दिन वह हारून के गिर्द जमा होकर कहने लगे, “आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।”

जवाब में हारून ने कहा, “आपकी बीवियाँ, बेटे और बेटियाँ अपनी सोने की बालियाँ उतारकर मेरे पास ले आएँ।” सब लोग अपनी बालियाँ उतार उतारकर हारून के पास ले आए तो उसने यह ज़ेवरात लेकर बछड़ा ढाल दिया। बछड़े को देखकर लोग बोल उठे, “ऐ इसराईल, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिसर से निकाल लाए।”

जब हारून ने यह देखा तो उसने बछड़े के सामने क़ुरबानगाह बनाकर एलान किया, “कल हम रब की ताज़ीम में ईद मनाएँगे।” अगले दिन लोग सुबह-सवेरे उठे और भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाईं। वह खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठकर रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।

मूसा की शफ़ाअत

उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, “पहाड़ से उतर जा। तेरे लोग जिन्हें तू मिसर से निकाल लाया बड़ी शरारतें कर रहे हैं। वह कितनी जल्दी से उस रास्ते से हट गए हैं जिस पर चलने के लिए मैंने उन्हें हुक्म दिया था। उन्होंने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बनाकर उसे सिजदा किया है। उन्होंने उसे क़ुरबानियाँ पेश करके कहा है, ‘ऐ इसराईल, यह तेरे देवता हैं। यही तुझे मिसर से निकाल लाए हैं’।”

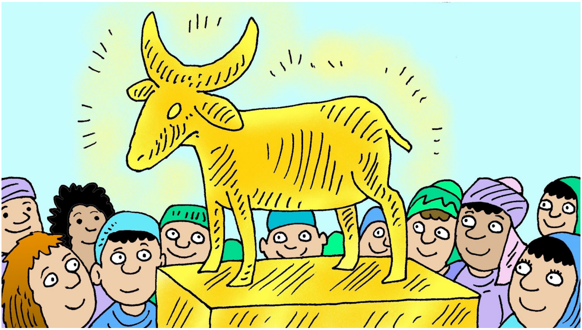

अल्लाह ने मूसा से कहा, “मैंने देखा है कि यह क़ौम बड़ी हटधर्म है। अब मुझे रोकने की कोशिश न कर। मैं उन पर अपना ग़ज़ब उंडेलकर उनको रूए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उनकी जगह मैं तुझसे एक बड़ी क़ौम बना दूँगा।”

लेकिन मूसा ने कहा, “ऐ रब, तू अपनी क़ौम पर अपना ग़ुस्सा क्यों उतारना चाहता है? तू ख़ुद अपनी अज़ीम क़ुदरत से उसे मिसर से निकाल लाया है। मिसरी क्यों कहें, ‘रब इसराईलियों को सिर्फ़ इस बुरे

मक़सद से हमारे मुल्क से निकाल ले गया है कि उन्हें पहाड़ी इलाक़े में मार डाले और यों उन्हें रूए-ज़मीन पर से मिटाए’? अपना ग़ुस्सा ठंडा होने दे और अपनी क़ौम के साथ बुरा सुलूक करने से बाज़ रह। याद रख कि तूने अपने ख़ादिमों इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से अपनी ही क़सम खाकर कहा था, ‘मैं तुम्हारी औलाद की तादाद यों बढ़ाऊँगा कि वह आसमान के सितारों के बराबर हो जाएगी। मैं उन्हें वह मुल्क दूँगा जिसका वादा मैंने किया है, और वह उसे हमेशा के लिए मीरास में पाएँगे’।”

मूसा के कहने पर रब ने वह नहीं किया जिसका एलान उसने कर दिया था बल्कि वह अपनी क़ौम से बुरा सुलूक करने से बाज़ रहा।

बुतपरस्ती के नतायज

मूसा मुड़कर पहाड़ से उतरा। उसके हाथों में शरीअत की दोनों तख़्तियाँ थीं। उन पर आगे-पीछे लिखा गया था। अल्लाह ने ख़ुद तख़्तियों को बनाकर उन पर अपने अहकाम कंदा किए थे।

उतरते उतरते यशुअ ने लोगों का शोर सुना और मूसा से कहा, “ख़ैमागाह में जंग का शोर मच रहा है!”

मूसा ने जवाब दिया, “न तो यह फ़तहमंदों के नारे हैं, न शिकस्त खाए हुओं की चीख़-पुकार। मुझे गानेवालों की आवाज़ सुनाई दे रही है।”

जब वह ख़ैमागाह के नज़दीक पहुँचा तो उसने लोगों को सोने के बछड़े के सामने नाचते हुए देखा। बड़े ग़ुस्से में आकर उसने तख़्तियों को ज़मीन पर पटख़ दिया, और वह टुकड़े टुकड़े होकर पहाड़ के दामन में

गिर गईं। मूसा ने इसराईलियों के बनाए हुए बछड़े को जला दिया। जो कुछ बच गया उसे उसने पीस पीसकर पाउडर बना डाला और पाउडर पानी पर छिड़ककर इसराईलियों को पिला दिया।

उसने हारून से पूछा, “इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया कि तुमने उन्हें ऐसे बड़े गुनाह में फँसा दिया?”

हारून ने कहा, “मेरे आक़ा। ग़ुस्से न हों। आप ख़ुद जानते हैं कि यह लोग बदी पर तुले रहते हैं। उन्होंने मुझसे कहा, ‘हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।’ इसलिए मैंने उनको बताया, ‘जिसके पास सोने के ज़ेवरात हैं वह उन्हें उतार लाए।’ जो कुछ उन्होंने मुझे दिया उसे मैंने आग में फेंक दिया तो होते होते सोने का यह बछड़ा निकल आया।”

मूसा ने देखा कि लोग बेक़ाबू हो गए हैं। क्योंकि हारून ने उन्हें बेलगाम छोड़ दिया था, और यों वह इसराईल के दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गए थे। मूसा ख़ैमागाह के दरवाज़े पर खड़े होकर बोला, "जो भी रब का बंदा है वह मेरे पास आए।" जवाब में लावी के क़बीले के तमाम लोग उसके पास जमा हो गए। फिर मूसा ने उनसे कहा, "रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, 'हर एक अपनी तलवार लेकर ख़ैमागाह में से गुज़रे। एक सिरे के दरवाज़े से शुरू करके दूसरे सिरे के दरवाज़े तक चलते चलते हर मिलनेवाले को जान से मार दो, चाहे वह तुम्हारा भाई, दोस्त या रिश्तेदार ही क्यों न हो। फिर मुड़कर मारते मारते पहले दरवाज़े पर वापस आ जाओ'।"

लावियों ने मूसा की हिदायत पर अमल किया तो उस दिन तक़रीबन 3,000 मर्द हलाक हुए। यह देखकर मूसा ने लावियों से कहा, "आज अपने आपको मक़दिस में रब की ख़िदमत करने के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करो, क्योंकि तुम अपने बेटों और भाइयों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए तैयार थे। इसलिए रब तुमको आज बरकत देगा।"

अगले दिन मूसा ने इसराईलियों से बात की, "तुमने निहायत संगीन गुनाह किया है। तो भी मैं अब रब के पास पहाड़ पर जा रहा हूँ। शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़्फ़ारा दे सकूँ।"

चुनाँचे मूसा ने रब के पास वापस जाकर कहा, "हाय, इस क़ौम ने निहायत संगीन गुनाह किया है। उन्होंने अपने लिए सोने का देवता बना

लिया। मेहरबानी करके उन्हें माफ़ कर। लेकिन अगर तू उन्हें माफ़ न करे तो फिर मुझे भी अपनी उस किताब में से मिटा दे जिसमें तूने अपने लोगों के नाम दर्ज किए हैं।”

रब ने जवाब दिया, “मैं सिर्फ़ उसको अपनी किताब में से मिटाता हूँ जो मेरा गुनाह करता है। अब जा, लोगों को उस जगह ले चल जिसका ज़िक्र मैंने किया है। मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा। लेकिन जब सज़ा का मुक़र्ररा दिन आएगा तब मैं उन्हें सज़ा दूँगा।”

फिर रब ने इसराईलियों के दरमियान वबा फैलने दी, इसलिए कि उन्होंने उस बछड़े की पूजा की थी जो हारून ने बनाया था।

रब ने मूसा से कहा, “इस जगह से रवाना हो जा। उन लोगों को लेकर जिनको तू मिसर से निकाल लाया है उस मुल्क को जा जिसका वादा मैंने इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किया है। लेकिन मैं साथ

नहीं जाऊँगा। तुम इतने हटधर्म हो कि अगर मैं साथ जाऊँ तो ख़तरा है कि तुम्हें वहाँ पहुँचने से पहले ही बरबाद कर दूँ।"

जब इसराईलियों ने यह सख़्त अलफ़ाज़ सुने तो वह मातम करने लगे। किसी ने भी अपने ज़ेवर न पहने, क्योंकि रब ने मूसा से कहा था, "इसराईलियों को बता कि तुम हटधर्म हो। अगर मैं एक लमहा भी तुम्हारे साथ चलूँ तो ख़तरा है कि मैं तुम्हें तबाह कर दूँ।"

मूसा ने कहा, "अगर तू ख़ुद साथ नहीं चलेगा तो फिर हमें यहाँ से रवाना न करना। अगर तू हमारे साथ न जाए तो किस तरह पता चलेगा कि मुझे और तेरी क़ौम को तेरा करम हासिल हुआ है? हम सिर्फ़ इसी वजह से दुनिया की दीगर क़ौमों से अलग और मुमताज़ हैं।"

रब ने मूसा से कहा, "मैं तेरी यह दरख़ास्त भी पूरी करूँगा, क्योंकि तुझे मेरा करम हासिल हुआ है और मैं तुझे बनाम जानता हूँ" (ख़ुरूज 32)।

सवाल

- **ख़ुदा अभी हज़रत मूसा को अहकाम की तख़्तियाँ देकर उनसे बात ही कर रहा था कि क़ौम ने वह कुछ बनाया जो बिलकुल मना था। उसने अपने लिए बुत बनाया। लोगों ने इतनी जल्दी से ख़ुदा को भूलकर गुनाह किया। ख़ुदा का क्या रदे-अमल है? वह जवाब में क्या करना चाहता है?**
  - ► वह गुनाहगार क़ौम को ख़त्म करके हज़रत मूसा के ज़रीए एक नई क़ौम क़ायम करना चाहता है।
- **इस तरह का सवाल पहले भी उभर आया था। कब?**
  - ► हज़रत नूह के ज़माने में। उनके ख़ानदान के सिवा तमाम लोग सैलाब में डूब मरे। उस वक़्त भी ख़ुदा हज़रत नूह और उसके ख़ानदान के ज़रीए नए सिरे से शुरू करना चाहता था। लेकिन हज़रत नूह और उनके ख़ानदान के अफ़राद भी बेगुनाह नहीं थे।
- **इसी तरह जब हम हज़रत इब्राहीम और उनकी औलाद पर नज़र डालें तो क्या वह बेगुनाह थे?**
  - ► ख़ुदा ने हज़रत इब्राहीम को चुन लिया। उसका उनके और उनकी औलाद के साथ ख़ास ताल्लुक़ था। लेकिन यह वही लोग थे जिन्होंने अब सोना का बछड़ा ढालकर उसकी पूजा की थी। एक बार फिर गुनाह बीच में आ गया और अल्लाह के साथ रिफ़ाक़त बिगड़ गई।

- **हज़रत मूसा ख़ुदा का फ़रमान सुनकर क्या सोचते हैं? क्या वह आराम से बैठकर सोचते हैं कि कोई बात नहीं। मुझसे तो गुनाह नहीं हुआ, मैंने ग़लती नहीं की। ख़ुदा मुझे तो जीने देगा। कोई बात नहीं अगर वह इन शरीरों को सज़ा दे। यह तो सज़ा के लायक़ ही हैं।**

  ► हरगिज़ नहीं। हज़रत मूसा यह बात सुनते ही अपनी क़ौम की सिफ़ारिश करने लगते हैं। वह इल्तिजा करते हैं कि अल्लाह क़ौम पर रहम करे।

  इससे बढ़कर वह दुबारा सीना पहाड़ पर चढ़कर अल्लाह से इल्तिजा करते हैं कि वह क़ौम को माफ़ करे। बल्कि वह अपनी क़ौम की सज़ा उठाने के लिए भी तैयार हैं। वह ख़ुदा से अलग होने के लिए तैयार हैं ताकि उसकी क़ौम बच जाए।

  तो भी ख़ुदा साफ़ साफ़ फ़रमाता है कि हर एक अपने गुनाहों का ज़िम्मेदार है। जिस तरह बाद में हिज़क़ियेल नबी ने फ़रमाया,

> जिससे गुनाह सरज़द हुआ है सिर्फ़ उसे ही मरना है। लिहाज़ा न बेटे को बाप की सज़ा भुगतनी पड़ेगी, न बाप को बेटे की। रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी का अज्र पाएगा, और बेदीन अपनी बेदीनी का। (हिज़क़ियेल 18:20)

ताहम ख़ुदा क़ौम को जीने देता है गो उसे सज़ा देनी पड़ेगी। नीज़, वह फ़रमाता है कि वह ख़ुद क़ौम के साथ नहीं चलेगा। यह सुनकर हज़रत मूसा इल्तिजा करता है कि अल्लाह आइंदा भी क़ौम के साथ चले। हज़रत मूसा को साफ़ मालूम था कि अल्लाह की राहनुमाई के बग़ैर इसराईली क़ौम बरबाद हो जाएगी।

- **ख़ुदा जवाब में क्या फ़रमाता है?**
  - ► वह मूसा की सुनकर वादा करता है कि मैं आइंदा भी क़ौम की राहनुमाई करूँगा।
- **ख़ुदा क्यों अपना इरादा बदल लेता है?**
  - ► हज़रत मूसा को अल्लाह की मेहरबानी हासिल है, और ख़ुदा हज़रत मूसा को बनाम जानता है।
- **यह कैसा ख़ुदा है? क्या वह दूर रहता है? नहीं, उसका हज़रत मूसा के साथ क़रीबी ताल्लुक़ है और वह उसे बनाम जानता है।**
  - ► ज़बूर में लिखा है कि ख़ुदा हर एक सितारे का नाम लेकर जानता है। और कितने बेशुमार सितारे होते हैं।

> वह सितारों की तादाद गिन लेता और हर एक का नाम लेकर उन्हें बुलाता है। (ज़बूर 147:4)

- **इसका हमारे लिए क्या मतलब है?**
  - ► ख़ुदा हममें से हर एक को बनाम जानता है। वह जानता है कि हम कहाँ हैं और हमारी क्या हालत है। और जब हम दुआ करते हैं तो वह हमारी हर बात सुनता है।

आइए हम पढ़ें कि इसके बाद क्या हुआ।

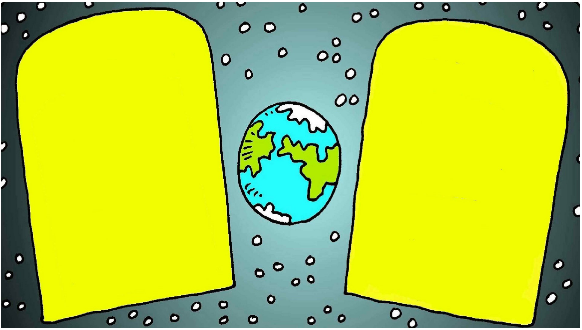

पत्थर की नई तख़्तियाँ

रब ने मूसा से कहा, “अपने लिए पत्थर की दो तख़्तियाँ तराश ले जो पहली दो की मानिंद हों। फिर मैं उन पर वह अलफ़ाज़ लिखूँगा जो पहली तख़्तियों पर लिखे थे जिन्हें तूने पटख़ दिया था। सुबह तक तैयार होकर सीना पहाड़ पर चढ़ना। चोटी पर मेरे सामने खड़ा हो जा। तेरे साथ कोई भी न आए बल्कि पूरे पहाड़ पर कोई और शख़्स नज़र न आए, यहाँ तक कि भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल भी पहाड़ के दामन में न चरें।”

चुनाँचे मूसा ने दो तख़्तियाँ तराश लीं जो पहली की मानिंद थीं। फिर वह सुबह-सवेरे उठकर सीना पहाड़ पर चढ़ गया जिस तरह रब ने उसे हुक्म दिया था। उसके हाथों में पत्थर की दोनों तख़्तियाँ थीं। जब वह चोटी पर पहुँचा तो रब बादल में उतर आया और उसके पास खड़े होकर अपने नाम रब का एलान किया। मूसा के सामने से गुज़रते हुए उसने

पुकारा, "रब, रब, रहीम और मेहरबान ख़ुदा। तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर। वह हज़ारों पर अपनी शफ़क़त क़ायम रखता और लोगों का क़ुसूर, ना-फ़रमानी और गुनाह माफ़ करता है। लेकिन वह हर एक को उसकी मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदैन गुनाह करें तो उनकी औलाद को भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नतायज भुगतने पड़ेंगे।"

मूसा ने जल्दी से झुककर सिजदा किया। उसने कहा, "ऐ रब, अगर मुझ पर तेरा करम हो तो हमारे साथ चल। बेशक यह क़ौम हटधर्म है, तो भी हमारा क़ुसूर और गुनाह माफ़ कर और बख़्श दे कि हम दुबारा तेरे ही बन जाएँ।"

तब रब ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ अहद बाँधूँगा। तेरी क़ौम के सामने ही मैं ऐसे मोजिज़े करूँगा जो अब तक दुनिया-भर की किसी भी क़ौम में नहीं किए गए। पूरी क़ौम जिसके दरमियान तू रहता है रब का काम देखेगी और उससे डर जाएगी जो मैं तेरे साथ करूँगा। जो अहकाम मैं आज देता हूँ उन पर अमल करता रह।

इसके बाद मूसा शरीअत की दोनों तख़्तियों को हाथ में लिए हुए सीना पहाड़ से उतरा। [...] उसने उन्हें बुलाया तो हारून और जमात के तमाम सरदार उसके पास आए, और उसने उनसे बात की। बाद में बाक़ी इसराईली भी आए, और मूसा ने उन्हें तमाम अहकाम सुनाए जो रब ने उसे कोहे-सीना पर दिए थे (ख़ुरूज 34:1-11; 29; 31-32)।

दस अहकाम यह थे :

- “मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर की ग़ुलामी से निकाल लाया। मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।
- अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुंदर में हो। न बुतों की परस्तिश, न उनकी ख़िदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा। लेकिन जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।
- रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

- सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो। हफ़ते के पहले छः दिन अपना काम-काज कर, लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे ख़ुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी और न तेरे मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। क्योंकि रब ने पहले छः दिन में आसमानो-ज़मीन, समुंदर और जो कुछ उनमें है बनाया लेकिन सातवें दिन आराम किया। इसलिए रब ने सबत के दिन को बरकत देकर मुक़र्रर किया कि वह मख़सूस और मुक़द्दस हो।
- अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देनेवाला है देर तक जीता रहेगा।
- क़त्ल न करना।
- ज़िना न करना।
- चोरी न करना।
- अपने पड़ोसी के बारे में झूठी गवाही न देना।
- अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। न उसकी बीवी का, न उसके नौकर का, न उसकी नौकरानी का, न उसके बैल और न उसके गधे का बल्कि उसकी किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

जब ख़ुदा ने इसराईली क़ौम को मिसर से निकालकर समुंदर और रेगिस्तान में से गुज़रने दिया तो ज़ाहिर हुआ कि वह एक ताक़तवर और अज़ीम नजातदहिंदा है।

इस क़ौम को उसने सीना पहाड़ पर अहकाम बख़्श दिए। उसकी मरज़ी यह थी कि क़ौम उसकी क़ौम हो जिससे वह रिफ़ाक़त रख सके। शर्त यह थी कि वह उसके अहकाम पर चले। क्या इस गुनाह के बाद उसने अपना सबक़ सीख लिया था? क्या अब से वह गुनाह से दूर रहने में कामयाब रही? इसके बारे में हम अगले सबक़ों में पढ़ेंगे।

हमारी क्या हालत है?

हमारी ख़ुदा से रिफ़ाक़त कैसी है?

क्या हम उससे बात करते हैं?

क्या हम उस पर भरोसा रखते हैं?

क्या हम गुनाह से आज़ाद हैं?

जो मज़ीद तफ़सील से हज़रत मूसा के बारे में पढ़ना चाहे, वह तौरेत में ख़ुरूज 20 से लेकर 34 तक पढ़े।